व्यक्ति और समाज
(INDIVIDUAL AND SOCIETY)

21.1 व्यक्ति और समाज का संबंध (Relation between individual and Society)

नैतिक दर्शन की समस्याओं पर विचार-विनिमय करने से पूर्व यह जान लेना आवश्यक है। किस अर्थ में मानव को सामाजिक प्राणी कहा जाता है। क्या मानव के लिए समाज आवश्यक है? किस अर्थ में मानव समाज का है? किस अर्थ में समाज मानव का है? दूसरे शब्दों में हम यों कह सकते हैं कि व्यक्ति और समाज में क्या संबंध है?

(क) व्यक्तिवाद या यांत्रिक सिद्धान्त (Individualistic or Mechanistic Theory)

व्यक्तिवाद के अनुसार समाज का प्रत्येक व्यक्ति एक आत्म निर्भर इकाई है। एक व्यक्ति दूसरे पर निर्भर नहीं है। इस मत के अनुसार व्यक्ति ने स्वार्थ हितों की पूर्ति के लिए समाज की रचना की। इसलिए समाज व्यक्तियों का संयोग मात्र है। समाज प्राकृतिक संस्था नहीं, बल्कि कृत्रिम है। प्राकृतिक अवस्था में मनुष्य की कोई संस्था नहीं थी, न था कोई समाज। मनुष्य स्वतंत्र था। एक व्यक्ति और दूसरे व्यक्ति में शत्रु संबंध था। उनमें कोई आन्तरिक सहयोग या सौहार्द की भावना नहीं थी। पर सबल के विरुद्ध निर्बल की रक्षा के लिए एक समझौते के अनुसार समाज की रचना हुई। इस सिद्धान्त को 'सामाजिक समझौता सिद्धान्त' कहा जाता है।

इस सिद्धान्त के समर्थक हैं — ह्वाक्स, लॉक तथा रूसो। सामाजिक समझौता-सिद्धान्त ही व्यक्तिवादी विचारधारा की आधारशिला है।

व्यक्तिवादी सिद्धान्त समाज को कृत्रिम विचार मानता है, प्राकृतिक नहीं। इसलिए समाज के व्यक्तियों में बाह्य संबंध है, आन्तरिक नहीं। जिस प्रकार किसी मशीन के विभिन्न अंग बाह्य संबंधों से जुड़े रहते हैं, उसी प्रकार समाज-रूपी मशीन में व्यक्ति बाह्य संबंधों से जुड़ा हुआ है। समाज की ऐसी धारणा के कारण ही इस मत को समाज का 'यान्त्रिक सिद्धान्त' (machanistic theory) भी कहा जाता है।

व्यक्तिवादी सिद्धान्त की मान्यताओं से यह स्पष्ट है कि समाज की अपेक्षा व्यक्ति का अधिक महत्व है। समाज तो व्यक्ति के हित की पूर्ति का एक साधन है। साध्य है व्यक्ति का हित। इसलिए साधना का साध्य की अपेक्षा अधिक मूल्य या महत्व नहीं विचारा जा सकता। समाज व्यक्ति के लिए है, न कि व्यक्ति समाज के लिए। व्यक्ति के विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए ही विभिन्न सामाजिक संगठनों की रचना हुई है। व्यक्तियों से पृथक् समाज का न कोई अस्तित्व है, न उसकी कल्पना की जा सकती है। इसलिए सामाजिक हित का अर्थ है समाज के विभिन्न व्यक्तियों को साथ लेकर चलना।